

शास्त्री प्रथम श्रवण, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अंकित-पत्र

अध्याय वध - काव्य श्रवण

कवि - मैथिलीशरण प्रसाद Date _____ Page _____

हर शोक पाण्डव पक्ष का, निज शिविर में हरि भी गये,
फिर शीघ्र ही भगवान ने प्रकटित किये कौतुक नये।
कर योगभाषा को सजग मिश्रित जगत की व्यापि को।
फट ले चले वे पार्थ को शिव निकट अस्त्र-प्राप्तिको।

भावार्थ:- प्रस्तुत पद के माध्यम से कवि मैथिलीशरण प्रसाद
कहते हैं कि अज्ञान से छलने जाने के बाद भगवान ने अपनी
पूर्ण भाषा फैला दी। इसके पश्चात् पाण्डव पक्ष का शोक
दूर करने के उपरान्त स्वयं भगवान भी अपने डेरे
(शिविर) में चले गये। वहाँ पहुँच कर उन्होंने शीघ्र ही
नये-नये खेल करने आरम्भ कर दिये। सर्व प्रथम
उन्होंने अपनी योगभाषा की शक्ति को जागृत किया
और उसे सम्पूर्ण संसार में फैला दिया। इसके बाद
स्वयं भगवान अर्जुन को साथ में लेकर भगवान
शिव के पास अस्त्र प्राप्ति के लिए ले गये।

प्रस्तुत पद में राष्ट्रवादी कवि ने भगवान
की योगभाषा का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया है।
भगवान शिव से अस्त्र प्राप्त करने के पश्चात् अर्जुन
अजेय हो गये।

डॉ० देवचरण प्रसाद

एसेन प्रीठ हिन्दी 16/12/20

राष्ट्रसंघमहाविठ सुरसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री प्रथम रकड, शाठरभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

जघद्रथ-वध

कवि - मैथिलीशरण गुप्त
भावार्थ

Page No.:

Date: / /

"नर-देव-सम्भव वीर वह रण-महद्य जाने के लिए,
बोला वचन निज सारथी से रथ सजाने के लिए।
यह विकट साहस देख उसका, सूत विस्मित हो गया,
कहने लगा इस जाँति फिर वह देव उसका वध नया।"

भावार्थ:-

प्रस्तुत पद के माध्यम से कवि वीर अभिमन्यु के युद्ध भूमि में जाने के लिए तैयार हो जाने का वर्णन करते हुए कहता है कि बालक वीर अभिमन्यु अपने सारथी से तैयार होने को कहता है। सारथी उसे सम्मानने का प्रयास करता है।

वीर अभिमन्यु मनुष्य रूपी देवता से उत्पन्न था। ऐसा वीर जब युद्धभूमि में जाने के लिए विलकुल तैयार हो गया तब उसने अपने सारथी से रथ सजाने का आदेश दिया। रथ को हँकने वाला अभिमन्यु के इस विकट साहस को देखकर आश्चर्य चकित रह गया। उसके जीवन में इस अद्भुत साहस और उत्साह को देख कर कुछ कहना चाहता है।

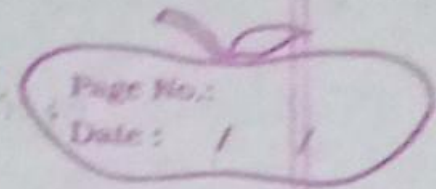
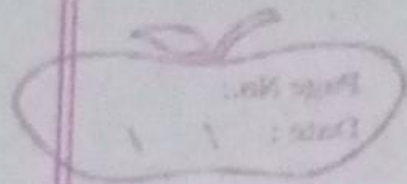
प्रस्तुत पद में नर-देव-सम्भव कह कर कवि ने इस तथ्य की ओर इंगित किया है कि कुंति ने इंद्र देवता का स्वयं आश्रय किया था जिसके फलस्वरूप जैसे पुत्र रत्न की उत्पत्ति हुई। इस रूप में अर्जुन की विशाओं में मानवी और देवी दोनों ही प्रकार के रक्त का सम्मिश्रण था जो अभिमन्यु को भी पिता से विरासत में मिला था। इसी लिए उसका साहस और उत्साह देवतै ही बनता था।

डॉ० देव चरण प्रसाद

एल० ए० प्री० हिन्दी

16/12/20

शाठर सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ



कवि की प्रकृति के दर्पण में जब वह अपना मुँह देखता है तो उसके मन में अपूर्व आनन्द और सुख-शान्ति का अनुभव होता है।

डॉ० देव चरण प्रसाद

एसो० प्रो० हिन्दी

16/12/20

शा० उ० सं० महावि० सुवर्सेना, पूर्णियाँ

(पथिक' काव्य

कवि - शमनरेश त्रिपाठी

Page No.:

Date: / /

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर:-

प्रश्न:- 'पथिक' खण्डकाव्य में कवि ने प्रकृति को किस रूप में देखा है?

उत्तर:- कवि शमनरेश त्रिपाठी ने 'पथिक' खण्डकाव्य में प्रकृति को व्यापक दृष्टि से देखने की चेष्टा की है। कवि की पुस्तक की रचना के पीछे प्रकृति के प्रेरणाकाम कर रही है। कवि ने पुस्तक के आरम्भ में 'मेरा कवित्वमें निवेदन किया है - 'पथिक' के पदों में मैंने प्राकृतिक दृश्यों को, जिसे देखा था, जगह-जगह टाक दिया है। कवि ने लिखा है - "श्री शमश्रुवश्म की यात्रा में पर्वत, वन, नदी और समुद्र तट का प्राकृतिक सौन्दर्य देखकर मेरे मन को जो सुख प्राप्त हुआ है उसकी कुछ झलकें इस 'पथिक' काव्य में लाने की मैंने चेष्टा की है।" इन पंक्तियों से स्पष्ट है कि कविने जहाँ-जहाँ प्रकृति का वर्णन किया है, वहाँ दक्षिण-भारत के मन्थरूपों का मूर्त रूप उपस्थित किया है। इसलिए प्रकृति वर्णन में किसी स्थान विशेष को ही अधिक स्थान दिया गया है।

प्रश्न:- 'पथिक' काव्य में प्रकृति का स्वरूप कैसा है?

उत्तर:- कवि त्रिपाठी जी प्रकृति में सुषुप्ति नहीं जागरण हैं, भावुकता नहीं सेजलता है, अभिव्यक्ति नहीं जागरण स्नेह है। यही कारण है कि उनकी प्रकृति - किसी रहस्यमय ढाँचि- देश का संकेत नहीं देती, प्राकृतिक सौन्दर्य किसी रहस्यमय सत्ता शक्ति का सन्देश नहीं देता है। त्रिपाठी जी के काव्य में प्रकृतिसंबंधी रहस्यमय की रोज करना स्वार्थ होगा, क्योंकि वे उसके व्यक्त स्वरूप के प्रेमी हैं, उसके प्रचलन रूप की भाँकि लाने के लिए आदि नहीं। इस

शेष अगे-